चेतक की वीरता

1. रण-बीच चौकड़ी भर-भरकर.....या आसमान पर घोड़ा था।

शब्दार्थ – रण – युद्ध
चौकड़ी भर-भरकर – छलाँग लगाकर
निराला – विशेष
पाला – प्रतियोगिता
तन – शरीर
कोड़ा – चाबुक
अरि – शत्रु
मस्तक – माथा

व्याख्या – प्रस्तुत काव्यांश में कवि राणा प्रताप के घोड़े चेतक की वीरता का गुणगान करते हुए बताता है कि महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक युद्धभूमि में चौकड़ी भरकर अर्थात छलाँगे मारकर सबसे विशेष बन गया था। चेतक इतनी तेज दौड़ लगाता था कि लगता था जैसे उसकी हवा के साथ प्रतियोगिता हो रही हो। चेतक के शरीर पर कभी भी राणा प्रताप का चाबुक नहीं पड़ता था क्योंकि वह सदैव सावधान रहता था और अपने स्वामी की आज्ञा को भली भाँति समझता था। चेतक को दौड़ता हुआ देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह शत्रुओं के मस्तक पर दौड़ लगा रहा हो।

2. जो तनिक हवा से बाग हिली.....सरपट दौड़ा करवालों में।

शब्दार्थ –
तनिक – जरा सा, थोडा
बाग –लगाम
सवार – वह जो घोड़े पर चढ़ा हो, अश्वारोही
पुतली – आँख का काल भाग
फिरी – घूमना
कौशल -कुशलता
भाला – एक शस्त्र
निर्भीक – निडर
ढाल – हथियार का वार रोकने वाला अस्त्र
सरपट – घोड़े के भागने की बहुत तेज़ गति
करवाल – तलवार

व्याख्या – हवा के कारण लगाम के हिलने को चेतक राणा प्रताप का इशारा समझता था और हवा से भी तेज़ दौड़ लगाना शुरू कर देता था। चेतक इतना समझदार था कि राणा प्रताप की आँख की पुतली के घूमने को उनका इशारा समझकर मुड़ जाता था। राणा प्रताप का घोड़ा चेतक युद्धभूमि में अपनी चाल के हुनर का परिचय देते हुए भयानक भालों के बीच से भी मानो उड़कर निकल जाता था। वह बिना डरे ढालों की परवाह किए बिना उनमें से निकल जाता था। वह तलवारों के बीच में भी तेज़ी से दौड़ कर निकल जाता था।